बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम् **दिनांक 02-09-2020**

विषय – हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नीति के दोहे (कविता) के अन्तर्गत रहीम जी के दोहे का अपने शब्दों में अर्थ स्पष्ट करेंगे।

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय.
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय.

अर्थ: मनुष्य को सोचसमझ कर व्यवहार करना चाहिए,क्योंकि किसी कारणवश यदि बात बिगड़ जाती है तो फिर उसे बनाना कठिन होता है, जैसे यदि एकबार दूध फट गया तो लाख कोशिश करने पर भी उसे मथ कर मक्खन नहीं निकाला जा सकेगा.

यों,रहीम सुख होत है
उपकारी के संग।
बॉटनवारे को लगे
ज्यों मेहंदी को रंग।।

अर्थ -

दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेहंदी लगाने वाले की उंगलियॉ खुद भी मेहंदी के रंग में रंग जाती हैं।जो इत्र बेचते हैं वो खुद उसकी सुगन्ध से महकते रहते हैं।दूसरों की मदद अथवा परोपकार का बडा ही महत्व है।समाजोपयोगी कार्य करने से व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढती है,प्रशंसा भी होती है जिससे व्यक्ति को असीम परितुष्टि का अहसास होता है।दूसरों की मदद करके भी हम अपने लिये रोग मुक्ति ,अच्छा स्वास्थय और दीर्घायु सुनिश्चित कर सकते हैं,इसमें संदेह नहीं।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि.
जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि.

अर्थ: रहीम कहते हैं कि बड़ी वस्तु को देख कर छोटी वस्तु को फेंक नहीं देना चाहिए. जहां छोटी सी सुई काम आती है, वहां तलवार बेचारी क्या कर सकती है?

गृहकार्य

(1) रहीम जी 'बिगड़ी बात 'की तुलना किससे की है?

(2) लालच के कारण मक्खी की क्या हालत होती है?